डॉ. राजन सुशान्त (कांगड़ा): सभापति महोदया, मैं एक बहुत महत्वपूर्ण विषय भारत सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं। हम जानते हैं कि 3 अक्टूबर से 14 अक्टूबर, 2010 तक कॉमनवैल्थ गेम्स दिल्ली में हो रहे हैं। यहा 19 स्पोर्ट्स वैन्यु बनाए जाने हैं और लगभग 10 हजार करोड़ रुपये का खर्च अनुमानित है। 17 स्टेडियम्स में 17 किस्म के खेल चलेंगे। यह सारा काम डीडीए, सीपीडब्ल्यूडी, एमसीडी, एनडीएमसी, मिनिस्ट्री ऑफ टूरिज़्म, अर्बन डैवलपमैंट और दिल्ली पुलिस कर रही है। इसके साथ ही अच्छे खिलाड़ियों को ट्रेनिंग देने के लिए भी 678 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है और लगभग 8 हजार के करीब खिलाड़ी इसमें शामिल होंगे। लेकिन मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि यह भारत के गौरव का प्रश्न है, मान और सम्मान का प्रश्न है।

19.00 hrs.

इस मौके को भारत दुनिया में एक वर्ल्ड पावर, ताकत दिखाने और आर्थिक शक्ति के रूप में भी विकसित करने के लिए प्रो कर सकता है। लेकिन अभी तक जो रिपोर्ट आयी है, वह बड़ी चिन्ताजनक है। हमारे जो काम हैं, कंस्ट्रक्शन्स हैं, चाहे स्टेडियम्स हैं, उनमें डिले हो रही है। एकमोडेशन की शार्टेज चल रही है। हमें यह चाहिए था कि इंडिया की मैडल की टैली इसमें बढ़ती, इप्रेसिव होती। लेकिन मुझे लग रहा है कि वर्ष 1982 के एशियाड गेम्स से भी यह तैयारी कमजोर चल रही है। इसमें सुरेश कलमाड़ी और माइक फेनेल का इगो क्लेश चल रहा है जिसकी वजह से यह प्रौब्लम आ रही है।

सभापति महोदया, भारत सरकार से मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे चाइना ने ओलम्पिक्स को एक चैलेंज के रूप में लिया था और अपने आपको एक वर्ल्ड पावर प्रूफ किया था, लगभग वैसा ही एक मौका हमें मिला है। चाइना में 15 हजार खिलाड़ी, एक लाख दर्शक और 80 देशों के महान नेता जिनमें यूएस प्रेजीडैंट बुश, रशिया के पुतिन और चाइना के जिन्ताओ सहित बहुत से लोग आये थे। चाइना की आबादी 130 करोड़ है जबकि हमारी 115 करोड़ है, लेकिन चाइना ने जिस भावना के साथ इस गेम्स को लिया था, मेरी भारत सरकार से प्रार्थना है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदया : आप अपनी बात शार्ट में रखिये। आप बहुत लम्बा भाषण मत दीजिए।

डॉ. राजन सुशान्त : मेरी प्रार्थना यह है कि हमारी हिन्दुस्तान सरकार इसे राष्ट्रीय गौरव के रूप मे ले और जल्द से जल्द सारे रुके हुए काम तेज गति से कराये, ताकि राष्ट्र की किरकिरी न हो, राष्ट्र का मजाक न उड़े।